खण्ड-9, अंक-1, वर्ष-2021, मु0प्र0 51-54
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v9i1.10
SJIF (2021) : 7.247

शोध पत्र

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन

माया शंकर
बी0एड्0 विभाग, एम0डी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़–230 135, उ0प्र0, भारत
mayashankarpbh@gmail.com

प्राप्ति तिथि–31.08.2021, स्वीकृति तिथि–14.10.2021

सार– वास्तव में बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी अभिवृत्तियाँ होती है। यद्यपि अभिवृत्ति एक मनो सामाजिक सम्प्रत्यय है जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में विद्यार्थी के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार की प्रवृत्ति को बताता है। अभिवृत्तियों की सहायता से ही विद्यार्थी के व्यवहार का आकलन एवं विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार अभिवृत्ति निःसन्देह बालकों के भावनाओं और आकांक्षाओं का समुच्चय है जो उसकी कार्य और व्यवहार को निर्देशित करता है। इसीलिए बालक के जीवनादर्शो और लक्ष्यों को अभिपूर्ति करने में अभिवृत्ति का योगदान महत्वपूर्ण होता है जो उसकी व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करता है। व्यावसायिक आकांक्षा के स्तर के आधार पर बालक अपने जीवन के अभीष्ट को प्राप्त करता है।

बीज शब्द– शैक्षिक अभिवृत्ति, व्यवसायिक आकांक्षा, स्नातक स्तर के विद्यार्थी

Study of the effect of academic attitude of graduate level students a vocational aspiration

Maya Shanker
Department of B.Ed., M.D. P.G. College, Pratapgarh-230 135, U.P., India
mayashankarpbh@gmail.com

Abstract- In fact, an important aspect of the child's entire personality is his attitude. Although there is still a psychological concept that describes the behaviour patterns of a child in different social situations. It is with the help of attitudes that the behaviours of the child is assessed and analyzed. Thus attitude is undoubtedly the set of feeling and aspirations of the child which guide his actions and behaviour. That is why the contribution of nectar is important in fulfilling the life ideas and goals of the child, which affects his professional aspiration, depending on the level of professional aspiration, the child alhives the desired of his life.

Key words- academic attitude, vocational aspiration, graduate level students

1. **परिचय–** नूतन सहस्राब्दी के आधुनिक भूमण्डलीय युग में किसी राष्ट्र के लिए उसके भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का अत्यन्त महत्व है। वस्तुतः भौतिक एवं मानवीय संसाधन नही किसी राष्ट्र को अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने के लिए सक्षम बनाते हैं। परन्तु भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृति जन्य होने के कारण आज के युग में मानव संसाधनों के विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब उस के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिले तथा वे उनका लाभ उठाने के लिए समर्थ हो सके। वस्तुतः मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है। प्रत्येक मनुष्य के अन्तर्निहित कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती है तथा उन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होते हैं तो मानव विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अन्तर्निहित परन्तु अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों की जन्मजात तथा अन्तर्निहित योग्यताओं के अधिकतम विकास के प्रति सचेष्ट रहता है।

वस्तुतः आज के विकासशील युग में प्रत्येक राष्ट्र अपने मानव संसाधन के संरक्षण एवं विकास पर प्रमुख जोर देते हैं। विकास के आधुनिक युग में राष्ट्र की बौद्धिक सम्पदा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित तथा प्रभावी विधा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान,

बोध व कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार का परिमार्जन करती है और शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। इसीलिए शिक्षा को सदैव से ही समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के एक महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली साधन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिककाल के गवेष्णातक सदैव से ही शिक्षा को सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से एक सम्मानजनक स्थान दिया जाता रहा है। प्राचीनकाल में शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त संकुचित तथा एकांकी था। उस समय शिक्षा को सूचनाएं प्राप्त करने तक सीमित माना जाता था। छात्रों की आवश्यकताओं, परिस्थितियों, क्षमताओं, रूचियों आदि का शिक्षा प्रक्रिया में कोई स्थान नहीं था। शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाने का श्रेय मनोविज्ञान को दिया जाता है। शिक्षा में मनोविज्ञान के प्रवेश के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का उद्भव हुआ। मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाने के साथ–साथ शैक्षिक समस्याओं के समाधान खोजने में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रयोग करने का प्रयास किया।[1–7]

2. **शोध अध्ययन का औचित्य–** शिक्षा समाज का दर्पण है और इस नाते समाज की आशाओं, आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करना शिक्षा की अनिवार्यता हो जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षा विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का द्योतक बन जाता है। अतएव शिक्षा को ज्ञान के साथ कौशलता के विकास का सरोकार अपनाकर विद्यार्थियों यानी भविष्य के नागरिकों को समाज में उत्पादक के तौर पर तैयार करना अभीष्ट है। अर्थात् विद्यार्थियों को हर स्तर पर समर्थ बनाने के लिए पोषित और उत्प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। इसी सन्दर्भ में डोहार्टी तथा लिविंग (2016) नामक मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि– यदि विद्यार्थियों में अभिरूचि और अभिवृत्तियों को समुन्नत बनाने के लिए उत्प्रेरक और समृद्ध भौतिक और मनोसामाजिक परिवेश के द्वारा पोषित और समर्थित न करा जाय तो उनके मस्तिष्क की क्षमताओं का विकास न्यून हो जाता है। इसी प्रकार वोल्वर्क (2014) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि किशोरों को क्षमतावान और ऊर्जावान बनाने के लिए उनकी क्षमता, रूचियों तथा अभिवृत्तियों को पुर्नवलित करना आवश्यक है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्नडाइक (1895) के प्रयास और त्रुटि के सिद्धान्त के आधार पर विभिन्न प्रक्रियाओं और प्रतिक्रियाओं से बालकों में चेतना की उत्पत्ति की जा सकती है। इसी आधार पर विद्यार्थियों के व्यवहार का निर्धारण किया जाता है।

अतः बालक की विभिन्न क्रियाओं व व्यवहारों से अर्जित योग्यता में अभिरूचि और अभिवृत्ति का प्रमुख स्थान है। एन0सी0ई0आर0टी0 (2005) ने अपने शोध परिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों में अभिरूचि और अभिवृत्ति के वर्धन हेतु कक्षीय कार्यक्रमों पर जोर दिया है। इसी प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) में भी शिक्षा के लिए व्यावहारिक फ्रेमवर्क का दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए कहा कि विद्यार्थियों में अभिरूचि और अभिवृत्ति का अध्ययन कर प्रेरणात्मक पाठ्यक्रमों की संरचना की जानी चाहिए। इसी आधार पर शोधार्थी ने शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन उनके व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव के आकलन हेतु अध्ययन करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

शिक्षा के सभी स्तरों में स्नातक स्तर, उच्च शैक्षिक कार्यशील नागरिकों के उत्पादन की स्थली मानी जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में जितनी अधिक कार्य कुशलता, व्यवहारशीलता, धनात्मक सोच और क्षमताएं विद्यमान होगी, देश और राष्ट्र में मानवीय संसाधनों की श्रेष्ठता उतनी ही परिलक्षित होगी और वह देश उतना ही अग्रणी रहेगा। इसी दृष्टि के आलोक में शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन ही प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्य स्पष्ट करता है।[3–5]

3. **शोध अध्ययन के उद्देश्य–** प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्देश्य निर्मित किये गये हैं–

1. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4. **शोध अध्ययन की परिकल्पना–** प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित परिकल्पनाएं कल्पित की गयी हैं–

1. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर पर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. **शोध प्रविधि–** शोध प्रविधि शोध अध्ययन की आधारशिला होती है, जिसमें शोध अध्ययन के चरों, न्यादर्शों तथा जनसंख्या के सम्बन्ध में जानकारी के साथ–साथ शोध अध्ययन के उपकरणों तथा विश्लेषण के सांख्यकीय प्रविधियों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रतापगढ़ जनपद के दो महाविद्यालयों एम0डी0 पी0जी0 कॉलेज एवं पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज में अध्ययनरत 50–50 (छात्र–छात्राओं) विद्यार्थियों को उनके कला और विज्ञान संवर्गो के आधार पर यादृच्छिकी विधि से चयनित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन के लिए एन0एस0 चौहान कृत हमारे दृष्टिकोण अभिवृत्ति मापनी तथा व्यावसायिक आकांक्षा मापनी के अध्ययन के लिए डॉ0 जे0एस0 ग्रेवाल की मापनी का प्रयोग किया है।[6]

6. **विश्लेषण एवं व्याख्या–**

तालिका–1

विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	50	59.73	9.63	2.202	7.53	3.419
छात्राएं	50	52.20	12.24			
स्वतंत्रांश मान 98 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान = 2.01 तथा 2.68 पर सार्थक						

प्रस्तुत **तालिका–1** से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्यापन में छात्रों के अभिवृत्ति का मध्यमान 59.73 तथा मानक विचलन 9.63 पाया गया। तथा छात्राओं के अभिवृत्ति का मध्यमान 52.70 तथा मानक विचलन 12.24 प्राप्त हुआ। दोनों वर्गो के प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 2.202 तथा माध्य अन्तर 7.53 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान 3.419 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रांश मान 0.05 के सार्थकता स्तर मान 2.01 तथा 0.01 के सार्थकता मान = 2.68 से अधिक है जिसके आधार पर कल्पित परिकल्पना निरस्त हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है स्नातक स्तर पर छात्रों एवं छात्राओं के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

तालिका–2

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
कला वर्ग के विद्यार्थी	50	54.12	8.96	1.829	2.19	1.197
विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	50	51.93	9.33			
स्वतंत्रांश मान .98 के 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान = 2.01 तथा 2.68 पर सार्थक						

उपरोक्त **तालिका–2** के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के अभिवृत्तियों के अध्ययन में कला वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 54.12 तथा मानक विचलन 8.96 पाया गया इसी प्रकार विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 51.93 तथा मानक विचलन 9.33 पाया गया। दोनों वर्गों के प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 1.829 तथा माध्य अन्तर 2.19 प्राप्त हुआ जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपातमान 1.197 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्राश 95 के 0. 05 तथा 0.05 सार्थकता मान 2.01 तथा 2.68 से कम प्राप्त हुआ जिसके कारण कल्पित परिकल्पना स्वीकृति हो जाती है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान और कला वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है और दोनों वर्गों के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता पायी गयी।[7]

तालिका–3

विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
शैक्षिक अभवृत्ति	100	61.53	10.33	1.787	8.37	4.683
व्यावसायिक आकांक्षा	100	53.16	14.59			
स्वतंत्रांश मान = 198 के सार्थकता स्तर = 0.05 तथा 0.01 के मान = 197 तथा 2.60 पर सार्थक						

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षा के अध्ययन में विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान 61.53 तथा मानक विचलन 10.33 प्राप्त हुआ जबकि उनके व्यावसायिक आकांक्षा का मध्यमान 53.16 तथा मानक विचलन 14.59 प्राप्त हुआ। प्राप्त प्राप्तांकों का विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 1.787 तथा माध्य अन्तर 8.37 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान 4.683 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रांश 198 के सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान 1. 97 तथा 2.60 से अधिक है जिससे कल्पित परिकल्पना अस्वीकृति हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव सार्थक है।[7]

7. **शोध निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ–** प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन में छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक अभिवृत्ति में असमानता पायी गयी जबकि कला और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता पायी गयी। इसी आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव भी सार्थक पाया गया। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति का उनकी व्यावसायिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। वास्तव में विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी अभिवृत्तियां होती है। यद्यपि अभिवृत्ति एक मनो सामाजिक सम्प्रत्यय है जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में विद्यार्थी के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार की प्रवृत्ति को बताता है। अभिवृत्तियों की सहायता से ही विद्यार्थी के व्यवहार का आकलन एवं विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार अभिवृत्ति निःसन्देह विद्यार्थियों के भावनाओं और आकांक्षाओं का समुच्चय है जो उसकी कार्य और व्यवहार को निर्देशित करता है। इसीलिए बालक के जीवनादर्शों और लक्ष्यों को अभिपूर्ति करने में अभिवृत्ति का योगदान महत्वपूर्ण होता है जो उसकी व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करता है। व्यावसायिक आकांक्षा के स्तर के आधार पर बालक अपने जीवन के अभीष्ट को प्राप्त करता है।

सन्दर्भ

1. मधुर, एस0 एस0 (2010) शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, प्रकाशन अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, मु0पृ0 13–14।
2. गुप्ता, एस0 पी0 (2010) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, प्रकाशन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. कुमार, संजीव एवं मिनाक्षी (2021) शिक्षाशास्त्र प्रतियोगिता, डाल्फिन पब्लिकेशन, पटना, मु0पृ0 224–226।
4. सक्सेना, सरोज (2010) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, प्रकाशन साहित्य प्रकाशन, आगरा, मु0पृ0 1–3।
5. कौर, जसराज एवं रितु बिष्ट (2017) अधिमका आकलन, प्रकाशन आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, मु0पृ0 299–301।
6. गुप्ता, एस0 पी0 एवं अल्का गुप्ता (2015) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाशन शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. चतुर्वेदी, शुभ्रा एवं शशि मलिक (2016) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य, प्रकाशन राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, आगरा, मु0पृ0 6–7।